[illegible]

Diversities in Indian Society

1. प्रजातीय भिन्नतायें (Racial differences) – भारत प्रजातियों का एक अजायबघर (Museum of Races) है। इस प्रदेश में बहुत नाटे कद वाले नीग्रिटो प्रजाति के लोग रहते हैं और लंबे कद वाले नॉर्डिक प्रजाति के लोग भी। यहाँ पीले या भूरे रंग वाले मंगोल लोग रहते हैं और चॉकलेटी रंग वाले प्रोटो-आस्ट्रेलॉयड प्रजाति के लोग भी। जहाँ एक ओर लम्बे सिर वाले भूमध्यसागरीय प्रजाति के लोग निवास करते हैं, वहीं दूसरी ओर चौड़े सिर वाले अल्पाइन प्रजाति के सदस्य भी यहाँ रहते हैं। इस प्रकार इस देश में नीग्रिटो, प्रोटो-आस्ट्रेलॉयड, मंगोल, भूमध्यसागरीय, अल्पाइन, डिनारिक, आर्मीनॉयड, नॉर्डिक आदि प्रजातियों का महामिलन हुआ है।

डॉ० गुहा ने कुछ निम्नलिखित प्रजातियों के बारे में बताया है, वे निम्नलिखित हैं:–

1) नीग्रिटो (Negrito) – यह नीग्रो प्रजाति की एक शाखा है जिसका कद बहुत नाटा होता है। इस उपप्रजाति के लोगों की अन्य शारीरिक

विशेषताएँ चौड़ा सिर, गहरा काला रंग, काले घने बाल, मोटे होंठ और चौड़ी नाक है। डॉ० गुहा के अनुसार यह भारत की सबसे पुरानी प्रजाति है और इसके अवशेष चिह्न कोचीन तथा त्रावनकोर की पहाड़ियों में रहने वाली कानी कादर और पलयन नामक जनजातियों में आसाम के अंगामी नागाओं में और पूर्वी बिहार की राजमहल की पहाड़ियों की जनजातियों में मिलते हैं।

(ख) प्रोटो-आस्ट्रेलॉयड (Proto Australoid) — इस प्रजाति के लोगों के सिर लम्बे, कद छोटा, बाल घुंघराले, खाल का रंग चॉकलेटी, नाक चौड़ी और होंठ मोटे होते हैं। इनके बालों का रंग काला और आँखों का रंग काला और भूरा होता है। मध्य भारत की अधिकांश जनजातियाँ इसी प्रजाति की हैं। दक्षिण भारत में भी ये लोग पाये जाते हैं। भील और चेन्चु जनजातियाँ इसी प्रजाति की मानी जाती हैं।

ग) मंगोलॉयड (Mongoloid) — इस प्रजाति के लोगों की प्रमुख शारीरिक विशेषतायें पीला या भूरा रंग, चपटा चेहरा, गालों की हड्डियाँ उभरी हुयी, नाक छोटी और चपटी, सिर चौड़ा और होंठ मोटे होते हैं। भारत में इस प्रजाति की दो मुख्य शाखायें हैं। प्रथम शाखा प्राचीन मंगोलॉयड है। इनमें लम्बे सिर और चौड़े सिर, यह दो भेद होते हैं। लम्बे सिर वाले आसाम और सीमांत प्रांत में बसी जनजातियों में और चौड़े सिर वाले चटगाँव तथा बर्मा में पाये जाते हैं। दूसरी शाखा तिब्बती मंगोलॉयड है। ये लोग सिक्किम और भूटान में तिब्बत से आकर बस गये

है।

ब) भूमध्यसागरीय (Mediterranean) - इस प्रजाति के लोगों की सामान्य विशेषताएँ निम्न है :- इस प्रजाति के लोगों का मध्यम कद, लम्बा सिर इनका भूरा रंग, चौड़ा मुँह, पतला होंठ और घुंघराले बाल। भारत में इसकी तीन शाखाएँ है, पर सभी लम्बे सिर वाले है। इन तीन शाखाओं में सबसे पुरानी उप प्रजाति प्राचीन भूमध्यसागरीय है जोकि कन्नड़, तमिल तथा मलयालम भाषा भाषी प्रदेशों में पाई जाती है। दूसरी शाखा भूमध्यसागरीय है। जो पंजाब और गुजरात की ऊपरी घाटी में मिलती है और तीसरी शाखा पूर्वी शाखा है जो पंजाब, सिन्ध, राजपुताना और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में पाई जाती है।

(ड.) पश्चिमी चौड़े सिर वाले (Western Brachy Cephalic) - भारतवर्ष की जनसंख्या में इस प्रजाति के भी तीन प्रकार है। पहला प्रकार अल्पाइन है। इसका सबसे महत्वपूर्ण शारीरिक लक्षण चौड़ा सिर है। इसके अतिरिक्त मध्यम कद, नाक छोटी, पर ऊँची और रंग पीलापन के साथ भूरा होता है। यह गुजरात में विशेष रूप से पाया जाता है और मध्यभाग, पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार में भी कहीं-कहीं मिलती है। इस प्रजाति का दूसरा शाखा डिनारी (Dinaric) है। यह बंगाल, उड़ीसा, काठियावाड़, कन्नड़ और तमिल भाषा भाषी प्रदेशों में मिलती है। बंगाल में इस शाखा का सबसे शुद्ध रूप मिलता है। इस प्रजाति की तीसरी शाखा आर्मीनायड है। बम्बई के पारसी लोग इस शाखा के ही प्रतिनिधि है।

(ग) नार्डिक (Nordic) – इस प्रजाति के लोगों के प्रमुख शारीरिक लक्षण लम्बे सिर, ऊँची और पतली नाक, लम्बे कद, पतले होंठ, बाल सीधे और साधारण घुँघराले और रंग गोरा या गेहुँआ होता है। इस प्रजाति के लोग सिन्धु नदी की ऊपरी घाटी तथा स्वात, पंजकोरा, कुमार, चित्राल नदियों की घाटियों में और हिन्दुकुश पर्वत के दक्षिण में मिलते हैं। ये काश्मीर, पंजाब और राजस्थान में भी फैले हुए हैं।

उपरोक्त विवेचना और भारत के प्रजातीय इतिहास से एक बात स्पष्ट ही है कि भारत की जनसंख्या के निर्माण में एक नहीं, अनेक प्रजातियों का योग रहा है। ये विभिन्न प्रजातियाँ विभिन्न समय में भारत आईं और एक दूसरे से मिश्रित होती रहीं। महत्वपूर्ण बात यह थी कि भारत की सामाजिक व्यवस्था कुछ ऐसी थी कि इनमें से प्रत्येक प्रजाति को इनमें कोई न कोई स्थान मिल ही गया और वे यहाँ के संपूर्ण सामाजिक ढाँचे का एक अभिन्न अंग बन गईं।